Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# किशोर विद्यार्थियों में बढता व्यावसायिक रूचि का रूझान

**पूजा कुमार***

* शोधार्थी, मायादेवी इंस्टिटयूट ऑफ एडवासं एजुकेशन, उज्जैन रोड़, देवास (म.प्र.) भारत

**शोध सारांश –** व्यावसायिक रुचि से तात्पर्य किसी व्यक्ति की पसंद, और नापसंद के अपने पैटर्न से है, जो किसी दिए गए व्यावसायिक क्षेत्र या व्यवसाय के लिए स्वयं या किसी अन्य स्रोत द्वारा किसी भी तरीके से, बुद्धिमानी से या नासमझी से पसंद किया जाता है। करियर किसी के भी जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। शुरुआत में ही किसी विशेष स्ट्रीम में करियर चुनने का छात्र के भविष्य पर लंबे समय तक प्रभाव पड़ता है। किसी भी छात्र के लिए यह बहुत जरूरी है कि वह अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न विषयों में से सावधानीपूर्वक विषय का चयन करे। सही विषय का चुनाव सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक है। विषयों में विस्तृत विकल्प हैं इसलिए, वे भ्रमित हैं कि उन्हें अपने सही भविष्य के लिए कौन सा विषय चुनना चाहिए। उनके करियर के लिए सही विषय का चयन करना बहुत मुश्किल काम है। इस स्तर पर छात्रों को उचित मार्गदर्शन की सख्त जरूरत है। मार्गदर्शन के स्रोत स्कूल के प्रशासक और कर्मचारी, वरिष्ठ नागरिक, मित्र, माता-पिता, पड़ोसी, प्रिंट और वीडियो मीडिया हैं। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा सामान्य शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण चरण हैं। इस स्तर पर, किशोर विद्यार्थी निर्णय लेते हैं कि उच्च शिक्षा प्राप्त करना है या तकनीकी प्रशिक्षण का विकल्प चुनना है या कार्यबल में शामिल होना है। किसी विषय में रुचि होना एक मानसिक संसाधन है जो सीखने को बढ़ाता है,जिससे बेहतर प्रदर्शन और उपलब्धि प्राप्त होती है। इसलिए शिक्षा और हमारे जीवन के अन्य क्षेत्रों में रुचि सफलता का एक महत्वपूर्ण घटक है। सर्वोत्तम संभव मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए, किसी व्यक्ति के शैक्षिक लक्ष्यों के बारे में जितना संभव हो उतना जल्दी सीखना महत्वपूर्ण है। जिससे वह उज्जवल भविष्य का निर्माण कर सकें।

**प्रस्तावना –** सिंह (2014) के अनुसार, व्यावसायिक रुचि किसी की प्राथमिकताओं, योग्यताओं, पसंद और नापसंद का अपना पैटर्न है, जिसे किसी व्यावसायिक क्षेत्र या व्यवसाय के लिए स्वयं या किसी अन्य स्रोत द्वारा बुद्धिमानी से या नासमझी से किसी भी तरह से पसंद किया जाता है। व्यावसायिक अभिरुचि का अर्थ आमतौर पर वह व्यवसाय है जिसमें व्यक्ति की रुचि होती है। व्यावसायिक रुचियाँ उस डिग्री को दर्शाती हैं जिस हद तक व्यक्ति कुछ निश्चित कैरियर विकल्पों या गतिविधियों/व्यवहारों को पसंद करते हैं जो विभिन्न पदों के लिए सामान्य हो सकते हैं। (शेमर, 2016)। स्ट्रॉन्ग (1954) के अनुसार, व्यवसाय का चुनाव उन बहुत महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक है जो एक व्यक्ति को अपने लिए करना चाहिए और यह चुनाव एक साधारण घटना के बजाय एक लंबी प्रक्रिया है। व्यावसायिक रुचि और विकल्प किशोरावस्था के दौरान अचानक प्रकट नहीं होते हैं, बल्कि वे विकासात्मक प्रक्रिया के परिणामस्वरूप प्रकट होते हैं। व्यावसायिक रुचि एक एकल विकल्प के रूप में नहीं है, बल्कि कई रुचियों का योग है जो किसी भी तरह से व्यावसायिक करियर पर प्रभाव डालती है। जो लोग अपनी क्षमता के अनुसार अपना करियर नहीं चुनते हैं, वे खराब योग्यता के कारण असफलता का शिकार होते हैं। (कोचर, 1984) व्यावसायिक रुचि के उपायों के विकास का उद्देश्य युवा व्यक्ति के झुकाव का आकलन करना है ताकि उसे ऐसे व्यवसाय के चुनाव में सहायता मिल सके जो उसके हितों को बनाए रखेगा, व्यक्तिगत रूप से संतुष्ट करेगा और उसे अपने पूरे कामकाजी जीवन में उपयोगी रूप से नियोजित रखेगा। लोगों को ऐसा करियर ढूंढने में मदद करने के प्रयास में, जो उन्हें सबसे अधिक खुशहाल बनाएगा, कई हाई स्कूल अब कुछ प्रकार की व्यावसायिक रुचि सूची का प्रबंधन करते हैं। व्यावसायिक रुचि सूची एक परीक्षण है जिसका उपयोग लोगों को उनकी रुचियों और उनसे मेल खाने वाले क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करने के लिए किया जाता है। कुछ मामलों में, वे वहां तक पहुंचने के लिए एक मार्ग की रूपरेखा तैयार करने में भी मदद कर सकते हैं, जिसमें वांछनीय कॉलेज की बड़ी पढ़ाई या आवश्यक कार्य अनुभव शामिल है। लक्ष्य हर किसी को इस प्रश्न का उत्तर देने में मदद करना है कि मैं क्या बनना चाहता हूँ? (शेमर, 2016) पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ व्यावसायिक हितों में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।माध्यमिक विद्यालयों द्वारा संचालित सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ वे तरीके और साधन हैं जिनसे विद्यालय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की रुचियों, प्रतिभाओं और क्षमताओं की पहचान कर सकता है। माध्यमिक विद्यालय स्तर पर, छात्र सहपाठियों, दोस्तों और माता-पिता के साथ साझा करते हैं कि वे भविष्य में क्या बनना चाहते हैं? छात्र केवल साथियों, दोस्तों और माता-पिता के प्रभाव के कारण किसी की रुचियों और क्षमताओं के आधार पर कुछ व्यवसायों को पसंद करते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। इसलिए, माध्यमिक विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक हितों का मूल्यांकन महत्वपूर्ण है, क्योंकि मूल्यांकन छात्रों को हितों के व्यावसायिक क्षेत्रों का पता लगाने का अवसर प्रदान करता है और दूसरी ओर शिक्षकों को छात्रों के व्यावसायिक हितों से संबंधित यथार्थवादी डेटा प्राप्त होता है। यह जानना कि छात्र भविष्य में क्या बनना चाहता है, शिक्षकों और स्कूल के लिए माध्यमिक विद्यालय स्तर पर महत्वपूर्ण है, व्यावसायिक मार्गदर्शन विशेष रूप से उन छात्रों को प्रदान किया जा सकता है जिनकी रुचियाँ अच्छी तरह से मेल नहीं खाती हैं या क्षमताओं के साथ संरेखित नहीं होती हैं। छात्रों को गणित और विज्ञान पसंद नहीं हो

सकता है, लेकिन वे इंजीनियरिंग को व्यावसायिक रुचि के रूप में व्यक्त करते हैं क्योंकि उनका दोस्त इंजीनियर बनना चाहता है। इसलिए, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए मार्गदर्शन और परामर्श में प्रशिक्षण आवश्यक है ताकि शिक्षक पेशेवर तरीके से मामले को संभालने में सक्षम हो सकें। काम की दुनिया में जटिलता माध्यमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों या शिक्षक–परामर्शदाताओं की आवश्यकता की मांग करती है ताकि शिक्षा के इस महत्वपूर्ण चरण में छात्रों को प्रभावी मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान किया जा सके।

**व्यवसायिक रुचियों की विशेषताएं:**

1. व्यवसायिक रूचि एक महान प्रेरक शक्ति है जो व्यक्ति को संज्ञानात्मक, सकारात्मक या भावात्मक व्यवहार में संलग्न होने के लिए राजी करती है।
2. व्यवसायिक रुचि और ध्यान एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं।
3. व्यवसायिक रुचियाँ जन्मजात होने के साथ–साथ अधिग्रहित स्वभाव भी हैं।
4. किसी की व्यवसायिक रुचि का पीछा करना हमेशा संतोषजनक होता है। करने में व्यक्ति की मदद करता है उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों को समझें।
5. सीखने में पठारों की पुनरावृत्ति। वे किसी व्यक्ति को थकान का प्रतिरोध करने और असफलता से बचने के लिए पर्याप्त शक्ति भी देते हैं।

**सीखने के लिए छात्र के बीच व्यवसायिक रुचि कैसे पैदा करें:**

**1. सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार:** प्रशिक्षक के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह अपनी कक्षा के प्रति करुणा और देखभाल प्रदर्शित करे। यह न केवल छात्र को अपना ध्यान अपनी पढ़ाई पर केंद्रित करने में मदद करेगा, बल्कि यह छात्र द्वारा अध्ययन की जा रही विषय वस्तु में रुचि पैदा करने की दिशा में भी एक लंबा रास्ता तय करेगा।

**2. छात्रों के बौद्धिक स्तर को समझना:** बच्चों के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखना जरूरी है। जब शिक्षा की बात आती है, तो व्यक्तिगत मतभेदों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

**3. सहज संचार:** यह शिक्षक का उत्तरदायित्व है कि वह सूचना को ऐसे तरीके से प्रदान करे जो छात्रों को आसानी से समझ में आ जाए। इसके उपयोग से छात्र ज्ञान और तथ्य प्राप्त कर सकेंगे। उनकी जिज्ञासा बढ़ेगी, और परिणामस्वरूप वे जो सीख रहे हैं, उस पर वे अधिक ध्यान देंगें।

**4. करके सीखना:** क्योंकि बच्चों की खेल में सहज रुचि होती है, खेल पर आधारित शिक्षा की एक पद्धति को शिक्षण रणनीति के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए। छात्रों को उनके शैक्षणिक कार्यों में रुचि दिखाने की अधिक संभावना है यदि उन्हें खेल पर आधारित दृष्टिकोण का उपयोग करके पढ़ाया जाता है।

**5. खाली समय और विश्राम:** छात्र सीखने और खेलने दोनों से थक जाते हैं और यह थकान उनके उत्साह को कम कर देती है। नतीजतन, विश्राम और अवकाश के समय के लिए पर्याप्त प्रावधान करना आवश्यक है।

**6. विषयों की अदला–बदली करें:** क्योंकि विद्यार्थियों का ध्यान सीमित है, एक ही विषय के निर्देश पर अत्यधिक समय खर्च करना उत्पादक नहीं होगा। इसलिए, शिक्षक को उपलब्ध समय को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए स्कूल कार्यक्रम की योजना बनानी चाहिए।

**7. परियोजना आधारित ज्ञान:** बच्चों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के लिए अंतर्निहित जिज्ञासा होती है। विद्यार्थियों के लिए सीखने का सबसे प्रभावी तरीका व्यावहारिक अनुभव है, इसलिए इसे सुविधाजनक बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप वे अपने काम पर अधिक ध्यान दे पाएंगे।

**व्यवसायिक शैक्षिक रुचि के आयाम:**

**1. खेती–बाड़ी:** कृषि हित क्षेत्र में खाद, पशुपालन, खेती, फलसंरक्षण, डेयरी, कृषि विस्तार, पशु चिकित्सा विज्ञान, ग्रामीण समाजशास्त्र, कृषि वनस्पति विज्ञान और अन्य संबंधित विषयों और गतिविधियों का अध्ययन शामिल है।

**2. गृह विज्ञान:** सामान्य गृह विज्ञान, गृह बजट की तैयारी, स्वच्छता, खाना पकाने, गृह प्रबंधन, गृह सज्जा, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, बच्चों की देखभाल, और संगीत नृत्य कुछ ऐसे विषय हैं जो गृह विज्ञान की छत्रछाया में आते हैं।

**3. मानविकी:** हिंदी, तर्कशास्त्र, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी साहित्य, नृविज्ञान, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षा, मनोविज्ञान और नागरिक शास्त्र जैसे विषय, अध्ययन क्षेत्रों के उदाहरण हैं जो मानविकी छत्र के अंतर्गत आते हैं।

**4. विज्ञान:** विज्ञान के अध्ययन में रसायन विज्ञान, भौतिकी, प्राणीशास्त्र, वनस्पति विज्ञान, भूविज्ञान, मौसम विज्ञान, परमाणुओं का विज्ञान, गणित, शल्य चिकित्सा, स्वास्थ्य विज्ञान, शरीर विज्ञान, सामान्य विज्ञान, और कई अन्य विषयों सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

**5. ललित कला:** मूर्तियां, संगीत, गीत, खिलौना बनाना, काष्ठकला, कला, ड्राइंग और पेंटिंग, सजावट की कला, नृत्य, आदि सभी विषयों या गतिविधियों के उदाहरण हैं जो रुचियों की 'ललित कला' श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

**6. तकनीकी:** फिटर का काम, इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल, और सिविल इंजीनियरिंग, वेल्डिंग, इंजीनियरिंग–ड्राइंग, रेडियोएटीवी इंजीनियरिंग, अनुप्रयुक्त गणित, भारतीय प्रौद्योगिकी, सामान्य तकनीक, गणित विज्ञान, आदि ऐसे विषयों और गतिविधियों में से हैं, जो प्रौद्योगिकी क्षेत्र को रुचिकर बनाते हैं।

**कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श की अवधारणा –** कैरियर मार्गदर्शन और परामर्श व्यक्तियों को सूचित शैक्षिक और व्यावसायिक विकल्प बनाने और लागू करने में सहायता करने के लिए व्यापक और विकासात्मक दृष्टिकोण को संदर्भित करता है। यह एक स्थापित वैज्ञानिक प्रथा है जो एक छात्र के स्कूल से उच्च शिक्षा और फिर उच्च शिक्षा से व्यवसायों में संक्रमण के लिए सुविज्ञ विकल्प चुनने पर आधारित है। कैरियर मार्गदर्शन और परामर्श में दीर्घकालिक पद्धतिगत आत्म–मूल्यांकन शामिल है। यह किसी व्यक्ति की शैक्षिक और व्यावसायिक विकल्पों के आत्म–अन्वेषण के साथ–साथ उसके करियर के बारे में निर्णय लेने की क्षमताओं को विकसित करने में मदद करता है। प्रारंभ में, कैरियर मार्गदर्शन और परामर्श को उन व्यक्तियों पर लक्षित अभ्यास माना जाता था जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और साथ ही जो कार्यरत हैं। लेकिन कामकाजी दुनिया और शिक्षा में तेजी से बदलते परिदृश्यों के साथ, स्कूली छात्रों के लिए भी करियर मार्गदर्शन और परामर्श की आवश्यकता बेहद महत्वपूर्ण हो गई है। एक सफल करियर की ओर यात्रा सही विषयों और स्ट्रीम या पाठ्यक्रम के चयन से शुरू होती है। माध्यमिक विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक मार्गदर्शन और व्यक्तिगत समर्थन न केवल

सही करियर विकल्प के साथ सरेखित होगा, बल्कि सही करियर स्ट्रीम की ओर भी ले जाएगा। कैरियर काउंसलिंग की अवधारणा ने अभी भी भारतीय समाज में गति नहीं पकड़ी है और छात्रों को अक्सर उनके ग्रेड के आधार पर वैज्ञानिक स्ट्रीम की ओर निर्देशित किया जाता है। छात्र अपने आसपास जो देखते हैं उसके आधार पर अपने करियर का चुनाव करते हैं या अपने माता-पिता के करियर का अनुसरण करते हैं क्योंकि वे केवल उसी के बारे में जानते हैं या कहीं और फिट होने की कोशिश करते हैं जो उन्होंने शायद टेलीविजन पर देखा है। इसके परिणामस्वरूप स्कूल छोड़ना, अस्वस्थ वयस्क जीवन और खराब व्यावसायिक विकल्प बनते हैं।

कैरियर काउंसलिंग एक छात्र की शिक्षा में सहायता करती है। करियर काउंसलिंग अब कोई विकल्प नहीं है। हर दिन हर क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के साथ, छात्रों को अपने हितों को अपने करियर के साथ जोड़ना चाहिए और इसे जल्द से जल्द शुरू करना चाहिए। लेकिन अक्सर ऐसा समय आता है जब उन्हें एहसास होता है कि रास्ता हितों के साथ बिल्कुल बेमेल है और पेशेवर जीवन में चीजें बिखरने लगती हैं। हालाँकि, अगर शुरुआत से ही उचित मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाए, अगर छात्रों के सामने सभी विकल्प पूरी जानकारी के साथ रखे जाएं, तो करियर चुनने की प्रक्रिया उस बिंदु पर शुरू हो सकती है जब गलत चयन के कारण न्यूनतम परिणाम होंगे। (स्वर्णप्रस्थ पब्लिक स्कूल, 2019) वास्तविक क्षमता की पहचान करने और छात्रों को सही करियर पथ की ओर मार्गदर्शन करने के लिए करियर काउंसलिंग एक आवश्यक कारक है। कैरियर परामर्श एक आवश्यकता है क्योंकि अधिकांश छात्र आमतौर पर ज्ञात डोमेन को अपने कैरियर विकल्प के रूप में चुनते हैं। करियर काउंसलिंग छात्रों को उनके स्कूल से ही उनकी रुचि और शिक्षा के क्षेत्र के अनुसार उपलब्ध करियर विकल्पों के बारे में करियर मार्गदर्शन देने का एक प्रयास है। कैरियर काउंसलिंग के माध्यम से, छात्रों के लिए एक विश्लेषण किया जा सकता है जो उनकी रुचियों और उनकी ताकत और कमजोरियों का पता लगाने में मदद करेगा।

माध्यमिक विद्यालय स्तर के लिए स्कूल में ही करियर काउंसलिंग की जानी चाहिए और इससे उन्हें यह तय करने में मदद मिलेगी कि उन्हें कौन सी स्ट्रीम चुननी चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि कई छात्र अपने द्वारा चुनी गई स्ट्रीम से संतुष्ट नहीं होते हैं और उसे बदलने की प्रवृत्ति रखते हैंय ऐसा उनकी रुचि और विभिन्न शिक्षा स्ट्रीम के अनुसार उपलब्ध विकल्पों के बारे में उचित मार्गदर्शन के अभाव में होता है।

करियर काउंसलिंग हमेशा से ही महत्वपूर्ण रही है लेकिन हाल ही में इसे वह पहचान मिली है जिसका यह हकदार है। पहले लोग नौकरी मिलने के बाद ही करियर में बदलाव के लिए करियर काउंसलर की तलाश करते थे और इससे नाखुश होते थे। इतना गलत फैसला आमतौर पर स्कूल से उत्पन्न होता है। कई छात्र अपने साथियों के बीच सबसे अधिक चुने गए करियर के आधार पर करियर का चुनाव करते हैं। वे एक बार भी इस बात पर विचार नहीं करते कि उन्हें क्या पसंद है, जब तक कि बहुत देर न हो जाए। यदि छात्र सही पाठ्यक्रम नहीं चुनते हैं, तो यह अनजाने में उनके करियर विकल्प को प्रभावित करेगा। सही करियर खोजने के लिए, यह समझ होनी चाहिए कि कौन सा कोर्स करना है और क्या क्षमताएं रुचियों से मेल खाती हैं।

स्कूल में करियर काउंसलिंग पाठ्यक्रम के चयन में गलत निर्णय लेने पर काबू पाने और छात्रों को ऐसी गलतियाँ करने से रोकने के लिए सही प्रकार की मदद सुनिश्चित करती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्रों के पास विचारों की स्पष्टता है, सही और नवीनतम सलाह प्राप्त करने के लिए छात्रों को हाई स्कूल में रहने के दौरान हर समय कैरियर परामर्शदाता उपलब्ध कराए जाने चाहिए। हाई स्कूल में लिए गए निर्णय अक्सर किसी छात्र का करियर बनाते या बिगाड़ते हैं। अनुभवी करियर परामर्शदाताओं को छात्रों की सोच और उनकी क्षमता को समझने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। एक बार जब किसी छात्र की क्षमता समझ में आ जाती है, तो परामर्शदाता छात्र को उसके लिए उपयुक्त सर्वोत्तम करियर का मार्गदर्शन करने में सक्षम होता है और उन्हें निर्णय लेने में मदद करता है जो करियर की सफलता सुनिश्चित करता है। छात्र सफल होना चाहते हैं और उन्हें मदद लेने में कोई आपत्ति नहीं है। वे पहले शर्म महसूस कर सकते हैं या मदद लेने में अपनी कमजोरी सोच सकते हैं, लेकिन उन्हें मजबूत करियर बनाने में मदद करना हमारी जिम्मेदारी है। स्कूलों में करियर काउंसलिंग सेल का होना ऐसा करने की दिशा में पहला कदम है। (गुप्ता जे, 2017)। मूल रूप से, कैरियर परामर्श में वह प्रक्रिया शामिल होती है जिसके द्वारा व्यक्ति एक कैरियर पथ बनाता है जो उसकी अपनी रुचियों, योग्यताओं, आवश्यकताओं और व्यक्तित्व के अनुसार तैयार किया जाता है। एक करियर काउंसलर करियर चयन की प्रक्रिया में मार्गदर्शन करेगा । स्कूल में एक असहाय 16 वर्षीय छात्र को विभिन्न स्ट्रीम की पसंद का सामना करना पड़ता है और उसके पास एकमात्र कैरियर मार्गदर्शन उसके माता-पिता की राय, उसके अंकों के आधार पर उसके शिक्षक का निर्णय और उसके दोस्तों और पड़ोसियों की टिप्पणियां हैं। यह इस बिंदु पर है कि कैरियर परामर्श बच्चे को इस अशांत समय से निपटने में मदद कर सकता है। हालाँकि भारत में बहुत से स्कूल छात्रों को करियर परामर्श नहीं देते हैं और यदि स्कूल में कोई पेशेवर परामर्शदाता नहीं है, जिस चीज के लिए पूरा झुंड जा रहा है, उसके लिए जाने से बेहतर हमेशा पेशेवर मार्गदर्शन लेना बेहतर होता है। शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन के साथ-साथ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रत्येक विषय के शिक्षकों द्वारा स्कूल में कैरियर मार्गदर्शन और परामर्श के एकीकरण से छात्रों को अपनी रुचियों और क्षमताओं को समझने में मदद मिलेगी। जब कोई अपनी रुचियों और क्षमताओं को समझता है तो आत्म-बोध के विकास की संभावना अधिक होती है। स्कूलों को आत्म-साक्षात्कार का माध्यम होना चाहिए। आत्म-साक्षात्कार वह अवस्था है जहां कोई व्यक्ति अपने आंतरिक मूल या स्वयं को स्वीकार करने और व्यक्त करने में सक्षम होता है और वहां पाई जाने वाली क्षमताओं और संभावनाओं को साकार करना शुरू कर देता है। परामर्श एक बहुत ही संवेदनशील प्रक्रिया है जिसके लिए मानव मानस की गहरी समझ की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति एक प्रभावी परामर्शदाता बनने का इरादा रखता है उसे पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के रूप में न केवल एक बार बल्कि बार-बार कठोर प्रशिक्षण से गुजरना होगा। यह समझते हुए कि परामर्श एक बहुत ही जटिल प्रक्रिया है, एक प्रभावी परामर्शदाता के लिए आवश्यक आवश्यकताएँ दूसरों की मदद करने के इरादे से एक पर्याप्त व्यक्तित्व, परामर्श के लिए पर्याप्त कौशल, एक परामर्शदाता के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का ज्ञान और परामर्श के क्षेत्र में पर्याप्त योग्यताएं हैं। इसलिए, एक प्रभावी परामर्शदाता बनने के लिए माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षकों को परामर्श के क्षेत्र में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

**व्यवसायिक रुचि-निर्माण रणनीतियाँ:**

**शिक्षकों और छात्रों के बीच मजबूत बंधन:** पाठ की सामग्री से जुड़ने से पहले छात्र पहले अपने शिक्षकों के साथ बातचीत में शामिल होते हैं। यदि

शिक्षक के दृष्टिकोण, दृष्टिकोण, या व्यवहार के कारण उन्हें अप्रिय भावनाओं का अनुभव होता है, तो विद्यार्थियों के लिए किसी भी गतिविधि में संलग्न होना कठिन होता है, जिसकी सलाहशिक्षक देता है।

1. **उनके ज्ञान का परीक्षण करें:** समस्याएं रुचि को उत्तेजित करती हैं। सच तो यह है कि अगर हम पूरी तरह से छात्रों की सुविधा को प्राथमिकता देंगे तो हम बच्चों को पढ़ाने में कभी सफल नहीं होंगे। छात्रों को पाठ्यक्रम, सामग्री, सीखने की प्रक्रिया और मूल्यांकन में कठिनाई की उचित डिग्री की आवश्यकता होती है। यह सीखने के लिए उनकी प्रेरणा और अंतत: विषय में उनकी सफलता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

2. **प्रत्येक विषय की मूल क्षमताओं का निर्धारण करें:** गणित संख्याओं, त्रिकोणों और विभेदीकरण से परे है। ये विषय विद्यार्थियों को आजीवन कौशल प्रदान करते हैं। गणित गणितीय सोच के बारे में है। भाषा संचार में भी सुधार करती है। पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना संचार को बढ़ावा देता है। पेंटिंग रचनात्मकता, नवीनता और अमूर्तता को प्रोत्साहित करती है। शिक्षकों को इन बुनियादी कौशलों और क्षमताओं में छात्रों की रुचि पैदा करनी चाहिए ताकि उन्हें विभिन्न गतिविधियों में व्यस्त रखा जा सके।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. रावल नटूभाई वी. शिक्षा और व्यवस्थापक में प्रोद्योगिकी (2006) निरव प्रकाशन,अहमदाबाद, (गुजरात)
2. सोनी रामगोपाल, उदयोन्मुख भारतीय समाज के शिक्षा के नये आयाम,(1998), एच.पी.भार्गव बुक हाउस, पुस्तक प्रकाशन एवं वितरक, भार्गव भवन- आगरा।
3. नागार्जुन सी.एम.(2006), शिक्षा अनुसंधान का षश्ठम् सर्वे भाग-1, (1993-2000),नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्।
4. कौल लोकेश (2005), शैक्षिक अनुसंधान कार्यप्रणाली , मेरठ, आर.लाल. बुक डिपो।
5. भटनागर, ए, और गुप्ता, एन. 1988, माध्यमिक छात्रों की कैरियर परिपक्वता: का प्रभाव।
6. मार्गदर्शन हस्तक्षेप कार्यक्रम. भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 23 (4), 42-50। शिक्षा में अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

**********